श्री सम्मेद शिखर कूटपूजन विधान

रचयिता : प.पू. साहित्य रत्नाकर आचार्य
श्री 108 विशदसागर जी महाराज

पुण्यार्जक
श्री सुभाष चंद्र जैन, पुत्र विशाल जैन
पौत्र वंश जैन
रोहतक हरियाणा 9813135454

कृति : श्री सम्मेद शिखर कूट पूजन
कृतिकार : परम पूज्य साहित्यरत्नाकर, क्षमामूर्ति आचार्य श्री विशदसागरजी महाराज
संस्करण : चतुर्थ-2023 प्रतियाँ : 1000
संकलन : मुनि श्री 108 विशालसागरजी महाराज,
ब्र, प्रदीप भैया 7568840873
सहयोगी : आर्यिका श्री भक्तिभारती माताजी
क्षुल्लिका श्री वात्सल्यभारती माताजी
संपादन : ब्रज्योति दीदी 9829076085,
ब्रआस्था दीदी 9660996425,ब्रसपना दीदी 9829127533 ब्रआरती दीदी 8700876822
प्राप्ति स्थल : 1. सुरेश जैन सेठी जयपुर, 9413336017
2. श्री महेन्द्र कुमार जैन, सैक्टर-3 रोहिणी, 9810570747
3. विशद साहित्य केन्द्र, रेवाड़ी 09416888879
webside- www.vishadsagar.com

स्तवन

तीर्थ अनादि त्रिकाल, जो कहलाए रे!।
सम्मेद शिखरजी हो-हो सम्मेद शिखर जी ।।
जिन तीर्थ कहाए रे!।
जीव यहाँ से मोक्ष गये, अपने सारे कर्म क्षये।
सिद्ध क्षेत्र वे कहलाते, भव्यों से पूजे जाते।।
ऐसे वे तीरथ हो-हो-ऐसे वे तीरथ शिवराह दिखाए रे!।।1।।
तीर्थ वंदना जो करते, कोष पुण्य से वे भरते।
संयम भाव जगाते हैं, विशद ज्ञान प्रगटाते हैं।।
ऐसे वे ज्ञानी हो-हो ऐसे वे ज्ञानी शिव पदवी पाए रे!।।2।।
धर्म प्राण यह देश कहा, जगत पूज्य अत एव रहा।
सभी धर्म का ध्यान करो, धर्मी का सम्मान करो।।
धर्मी ही जग में हो-हो-धर्मी ही जग में सद्धर्म बचाए रे!।।3।।
तीर्थ की रक्षा करो सभी , मिट ना पाए कोई कभी।
तीर्थों से ही धर्म चले, 'विशद' मोक्ष का मार्ग चले।
तीर्थों के हेतू हो-हो-तीर्थों के हेतू जी जान लगाओ रे!।।4।।

सम्मेद शिखर पूजन

स्थापना

तीर्थराज सम्मेदशिखर है, अतिशयकारी महिमावान।
कोटि कोटि मुनि मोक्ष पधारे, शाश्वत तीर्थक्षेत्र निर्वाण।।
भक्ति भाव से पूजन करने, श्री जिनवर का है आह्वान।
हम भी शिव पदवी को पाएँ, करें विशद हम भी गुणगान।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।

जल चंचलता परिहारी, जन्मादिक रोग निवारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें, इस भव से मुक्ती पाए।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन भव ताप निवारी, भवि जीवों को शिवकारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें, इस भव से मुक्ती पाए।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षत अक्षयपददायी, अनुपम है मोक्ष प्रदायी।
हम तीर्थराज को ध्यायें, इस भव से मुक्ती पाए।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अक्षयपद प्राप्ताय अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

ये सुमन सु मन कर्तारी, हैं काम रोग निरवारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें, इस भव से मुक्ती पाए।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नैवेद्य सरस मनहारी, हैं क्षुधा रोग परिहारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें, इस भव से मुक्ती पाए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यह दीपक मोह निवारी, जग जीवों को शिवकारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें, इस भव से मुक्ती पाए।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ धूप कर्म परिहारी, जो आठों रोग निवारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

फल सरस मोक्ष कर्तारी, पद दायक हैं अविकारी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ अर्घ्य अनर्घ्य प्रदायी, जीवों को शिव पद दायी।
हम तीर्थराज को ध्यायें , इस भव से मुक्ती पाए।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- शांती पाने के लिए, देते शांतीधार।
विशद भावना है यही, पाएँ भव से पार।।

शांति शांतिधारा

पुष्पांजलि करते यहाँ, लेकर पावन फूल।
भाते हैं ये भावना, शिवपथ हो अनुकूल।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

जयमाला

दोहा- शाश्वत तीरथराज है, गिरि सम्मेद महान्।
अर्चा करते भाव से, पाने पद निर्वाण।।

तर्ज- माता तू दया करके.....

जिनवर की भक्ती में, हर श्वांस समर्पित है।
क्या और करें अर्पण, यह जीवन अर्पित है।।
सब जीव अनादी से, जग में भटकाए हैं।
भोगों की आशा में, भारी दुख पाए हैं।।
निकले निगोद से तो, स्थावर में आए।
भू जल अग्नी वायू, तरुवर में उपजाए।।1।।
दुर्लभ चिंतामणि जैसी, पर्याय में उपजाए।
त्रस हुए भी कुचले, जल कट के दुख पाए।।
कभी हुए असंज्ञी तो, मन से भी हीन रहे।
सैनी जो निबल हुए, तो भी कई कष्ट सहे।।2।।
कभी क्रूर हुए सैनी, कई जीव मार खाए।
कर-कर मायाचारी, पशुगति फिर फिर पाए।।

कभी संक्लेश भावी , हो नरक में उपजाए।
वहॉ शीत उष्ण के भी, अतिशय कर दुख पाए।।3।।
जहॉ नित्य अशुभ लेश्या, परिणाम देह पाए।
पा अशुभ विक्रिया वेदन, कई अतिशय दुख पाए।।
कर्मो का फल पाके कोई, मनुज गति में आए।
निज कर्मों का क्षयकर, शुभ सिद्ध शिला जाए।।4।।
प्रभु रत्नत्रय पाके, निज कर्म नशाते हैं।
वे सिद्ध शुद्ध अविकल ,पद को प्रगटाते हैं।।
हम कर्म दहन करके, शिव पद को पाएंगे।
निज 'विशद'ज्ञान पाके, शिवपुर को जाएंगे।।5।।
दोहा- महिमा तीर्थ सम्मेद गिरि, की है अपरंपार।
विशद भाव से पूजते, नत हो बारंबार।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जयमाला पूर्णर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा-तीर्थराज की वंदना , करके प्रभु गुणगाान
मोक्षमार्ग पर जो बढ़ें ,पावें शिव सोपान।।

इत्याशीर्वादः पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

पारसनाथ कूट से वंदना प्रारंभ विधि पूजा

अर्घ्यावली (दोहा)

श्री पारसनाथ जी की टोंक(स्वर्णभद्र कूट)

स्वर्ण कूट से शिव गये, पार्श्वनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।1।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वर्णभद्रकूट से श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि 82 करोड़ 84 लाख 45 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वर्णभद्र कूट के दर्शन का फल सोलह करोड़ उपवास।)

नेमिनाथ भगवान जी की टोंक

ऊर्जयन्त से शिव गये, नेमिनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।2।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कूट से आषाढ़ सुदी सातै को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि व 72 करोड़ 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री अजितनाथ जी की टोंक(सिद्धवर कूट)

कूट सिद्धवर से गये, अजितनाथ शिवराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सिद्धवरकूट से श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि 1 अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सिद्धवर कूट के दर्शन का फल बत्तीस करोड़ उपवास।)

श्री विमलनाथ जी की टोंक(सुवीर कूट)

सुवीर कूट से शिव गये, विमलनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीरकूट से श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि 70 कोड़ाकोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुवीर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री सुपार्श्वनाथ जी की टोंक(प्रभास कूट)

प्रभाष कूट से शिव गये, श्री सुपार्श्व जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभासकूट से श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि 49 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 7 सौ 42 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रभास कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री महावीर भगवान जी की टोंक

पावापुर से शिव गये, महावीर जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।6।।

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र से कार्तिक वदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि व 26 मुनि सहित मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ जी की टोंक(कुंदप्रभ कूट)

कूट कुंदप्रभ से गये, शांतिनाथ शिवराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुन्दप्रभकूट से श्री शांतिनाथ तीर्थंकरादि 9 कोड़ाकोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुन्दप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री सुमतिनाथ जी की टोंक(अविचल कूट)

अविचल कूट से शिव गये, सुमतिनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचलकूट से श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि 1 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अविचल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री धर्मनाथ जी की टोंक(सुदत्तवर कूट)

सुदत्त कूट से शिव गये, धर्मनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुदत्तवरकूट से श्री धर्मनाथ तीर्थंकरादि 29 कोड़ाकोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 795 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की कूट का अर्घ्यं

गणनायक ऋषभादि के, तारणतरण जहाज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।10।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम उद्यान से आदि भिन्न-भिन्न, स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन-वचन-काय से अत्यन्त भक्ति भाव से नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथ जी की टोंक(ज्ञानधर कूट)

कूट ज्ञानधर से गए, कुंथुनाथ शिवराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।11।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ज्ञानधरकूट से श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरादि 96 कोड़ाकोड़ी 96 करोड़ 32 लाख 96 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री नमिनाथ जी की टोंक(मित्रधर कूट)

कूट मित्रधर से गये, नमीनाथ शिवराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित श्री नमिनाथ तीर्थंकरादि 9 कोड़ाकोड़ी 1 अरब 45 लाख 7 हजार 9 सौ 42 मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अरहनाथ जी की टोंक(नाटक कूट)

नाटक कूट से शिव गये, अरहनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।13।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूट से श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि 99 करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास।)

श्री मल्लिनाथ जी की टोंक(संबल कूट)

संबल कूट से शिव गये, श्री मल्ली जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संबलकूट से श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि 99 करोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संबल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री श्रेयनाथ जी की टोंक(संकुल कूट)

संकुल कूट से शिव गये, श्री श्रेयांस जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।15।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुलकूट से श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि 99 कोड़ाकोड़ी 99 करोड़ 99 लाख 9 हजार 5 सौ 42 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संकुल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास।)

श्री पुष्पदंत जी की टोंक(सुप्रभ कूट)

सुप्रभ कूट से शिव गये, पुष्पदंत जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभकूट से श्री पुष्पदंत तीर्थंकरादि 1 कोड़ाकोड़ी 99 लाख 7 हजार 480 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री पद्मप्रभ जी की टोंक(मोहन कूट)

मोहन कूट से शिव गये, पद्म प्रभ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मोहनकूट से श्री पदमप्रभु तीर्थंकरादि 99 कोड़ाकोड़ी 87 लाख 43 हजार 727 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की टोंक(निर्जर कूट)

निर्जर कूट से शिव गये, मुनिसुव्रत जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।18।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित निर्जरकूट से श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि 99 कोड़ाकोड़ी 9 करोड़ 99 लाख 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(निर्जर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री चन्द्रप्रभ जी की टेंक (ललित कूट)

ललितकूट से शिव गये, चन्द्रप्रभ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।19।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललितकूट से श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि 900 चौरासी अरब 72 करोड़ 80 लाख 84 हजार 595 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

आदिनाथ भगवान जी की टेंक

अष्टापद से शिव गये, आदिनाथ जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।20।।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र स्थित कूट से माघ सुदी चौदस को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि व दस हजार सहित मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ जी की टेंक(विद्युत कूट)

विद्युतकूट से शिव गये, श्री शीतल जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।21।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतकूट से श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि 18 कोड़ाकोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अनंतनाथ जी की टेंक(स्वयंभू कूट)

कूट स्वयंभू से गये, शिव अनंत जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।22।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभकूट से श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि 96 कोड़ाकोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री संभवनाथ जी की टोंक (धवल कूट)

धवल कूट से शिव गये, श्री संभव जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।23।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवलकूट से श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि 9 कोड़ाकोड़ी 72 लाख 42 हजार 500 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धवल कूट के दर्शन का फल बयालीस लाख उपवास।)

वासुपूज्य भगवान जी की टोंक

चंपापुर से शिव गये, वासुपूज्य जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।24।।

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र से भादवा सुदी चौदस को श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि 1 हजार मुनि मंदारगिरि से मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदननाथ जी की टोंक (आनंद कूट)

आनंद कूट से शिव गये, अभिनंदन जिनराज।
पूज रहे जिनके चरण, पाने शिव साम्राज्य।।25।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनंदकूट से श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि 72 कोड़ाकोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 42 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आनन्द कूट के दर्शन का फल एक लाख उपवास।)

जयमाला

दोहा– **शास्वत तीरथ राज है, गिरि सम्मेद महान।**
अर्घ करते भाव से , पाने पद निर्वाण।।

छन्द–तामरस

जय जय तीरथ राज नमस्ते, तारण तरण जहाज नमस्ते।
गणधर पद चौबीस नमस्ते, सिद्ध अनन्त त्रयोदश नमस्ते।।1।।
प्रथम ज्ञानधर कूट नमस्ते, कूट मित्रधर पूज्य नमस्ते।
नाटक कूट प्रधान नमस्ते, संवल कूट महान नमस्ते।।2।।
संकुल कूट विशेष नमस्ते, सुप्रभ कूट जिनेश नमस्ते।
मोहन कूट पे जाय नमस्ते, निर्जर कूट जिनाय नमस्ते।।3।।

ललित कूट है दूर नमस्ते, अष्टापद भरपूर नमस्ते।
विद्युतवर मनहार नमस्ते, कूट स्वयंभू सार नमस्ते।।4।।
धवल कूट है स्वेत नमस्ते, चम्पापुर जी क्षेत्र नमस्ते।
आनन्द कूट गिरीश नमस्ते, कूट सुदत्त ऋषीश नमस्ते।।5।।
अविचल कूट मुनीश नमस्ते,कूट कुन्दप्रभ शीश नमस्ते।
पावापुर जी क्षेत्र नमस्ते, कूट प्रभास विशेष नमस्ते।।6।।
पावन कूट सुवीर नमस्ते, कूट सिद्धवर तीर नमस्ते ।
गिरि गिरनार अटूट नमस्ते, स्वर्णभद्र शुभ कूट नमस्ते।।7।।

दोहा– महिमा तीर्थ सम्मेद गिरि, की है अपरम्पार।
"विशद" भाव से पूजते, नत हो बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थराज सम्मेद शिखर सिद्ध क्षेत्रेभ्यो: नम: अनर्घ पद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा– तीर्थराज की वंदना, करके प्रभु गुणगान।
मोक्षमार्ग पर जो बढ़ें, पावें शिव सोपान।।

।। इत्याशीर्वाद: पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

आचार्य श्री विशदसागर जी महाराज का अर्घ्य

प्रासुक अष्ट द्रव्य हे गुरुवर! थाल सजकर लाये हैं।
महव्रतों को धारण कर लें, मन में भाव बनाये हैं।
विशद सिंधु के श्री चरणों में, अर्घ समर्पित करते हैं।
पद अनर्घ हो प्राप्त हमें गुरु, चरणों में सिर धरते हैं।

ॐ ह्रूँ 108 आचार्य श्री विशदसागर मुनीन्द्राय अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

तीर्थराज श्री सम्मेद शिखर पूजन

स्थापना

तीर्थराज सम्मेद शिखर जी भाई रे!।
पूज्य लोक में रहा अनादी भाई रे!।।
जिसकी अर्चा करने को हम भाई रे!।
हृदय में आह्वानन् करते हैं भाई रे!।।
दोहा- तीर्थराज की वंदना, करते जीव त्रिकाल।
करें करावें भाव से, वे हों मालामाल।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन्! अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वाननं। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणं।पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

प्रासुक जल के कलश भराए भाई रे!।
भाव सहित हम चढ़ा रहे हैं भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।1।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् जन्म-जरा-मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन सुरभित घिस के लाए भाई रे!।
है भव ताप निवारक जग में भाई रे!।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अक्षय अक्षत धोके लाए भाई रे!।
भवि जीवों को अक्षय सुपद प्रदायी रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अक्षय पद प्राप्ते अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

पुष्प थाल में भर के लाए भाई रे!।
काम रोग के नाशी हैं जो भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत के शुभ नैवेद्य बनाए भाई रे!।
क्षुधा रोग के नाशी गाए भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।5।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गौ घृत के यह दीप जलाए भाई रे!।
मोह महातम नाशी गाए भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।6।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अग्नी में शुभ धूप जलाए भाई रे!।
अष्ट कर्म का नाश करें हम भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।7।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

ताजे फल रसदार मँगाए भाई रे!।
मोक्ष महापद पाने हेतु भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।8।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् मोक्षफल प्राप्ताय फलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट द्रव्य का अर्घ्य बनाए भाई रे!।
पद अनर्घ्य हम भी पा जाएँ भाई रे!।।
श्री सम्मेद शिखर है पावन भाई रे!।
जिन अर्चा जीवों को मोक्ष प्रदायी रे!।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा- तीन लोक में पूज्य है, काल अनादि त्रिकाल।
तीर्थराज सम्मेदगिरि, की गाते जयमाल।।

तर्ज- भाई रे!-----

तीर्थराज सम्मेद शिखर की, महिमा अतिशायी।
तीर्थंकर की दिव्यध्वनि शुभ, आगम में गाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।
तीर्थक्षेत्र की भाव वंदना, जानों शिवदायी।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।1।।
भूतकाल में सिद्ध अनंता-नंत हुए भाई।
तीर्थंकर हो केवलज्ञानी, पाए प्रभुताई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।2।।
हुण्डावसर्पिणी काल रहा यह, इसमें भी भाई।
बीस तीर्थंकर एवं मुनि कइ, शिव पाए भाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।3।।
काल अनागत में तीर्थंकर, एवं ऋषि भाई।
मोक्ष महापदवी पाऐंगे, निज आतम ध्यायी।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।4।।
अक्षयानंत जीव राशी से, भव्य जीव भाई।
रत्नत्रय पा करें साधना, मन में हर्षाई।।

भव्य जन पूजो हो भाई!।।5।।
गुप्ति समीती धर्मानुप्रेक्षा, से संवर भाई।
तप से कर्म निर्जरा कर जो, शिव पाएँ भाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।6।।
तीर्थ वंदना करें कराएँ, मन में हर्षाई।
पुण्य प्राप्त करके अनुक्रम से, शिव पाएँ भाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।7।।
महिमा तीर्थ वंदना की शुभ, संतों ने गाई।
'विशद' भाव के धारी पाएँ, मुक्ती अतिशाई।।
भव्य जन पूजो हो भाई!।।8।।
दोहा- गये अनादी जाएंगे, शिवपुर जीव अनंत।
अर्घ्य चढ़ाते जिन चरण, पाने भव काअंत।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखरादि तीर्थंकर निर्वाण क्षेत्र असंख्यात सिद्ध परमेष्ठिन् अनर्घपद प्राप्ताय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा- कण-कण पावन है विशद, भू का अतिशयवान।
शीश झुकाएँ भक्त जन, पाएँ पुण्य निधान।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्...

चौपड़ा कुंड स्थित जिनालय का अर्घ्य

तीर्थराज सम्मेद शिखर पर, कुंड चौपड़ा रहा महान्।
मूलनायक श्री पार्श्वनाथ जी, चन्द्र बाहुबली हैं भगवान।।
आदिनाथ श्री महावीर जिन, की प्रतिमाएँ मंगलकार।
प्रभु चरणों में अर्घ्य चढ़ाते, विशद भाव से बारंबार।।

ॐ ह्रीं चौपड़ा कुण्ड विराजित श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चौबीस तीर्थंकरों के गणधरों की कूट का अर्घ्य

मुख्य गणी चौबिस जिनवर के भाई रे!।
महावीर के गणनायक भी भाई रे!।।
मोक्ष महापदवी को पाए भाई रे!।
अर्घ्य चढ़ाकर पूज रहे हम भाई रे!।।1।
दोहा- चौबीसों जिनराज के, गणनायक हैं जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।1।।

ॐ ह्रीं श्री गौतम स्वामी आदि गणधर देवग्राम उद्यान से आदि भिन्न-भिन्न, स्थानों से निर्वाण पधारे हैं तिनके चरणारविन्द को मेरा मन-वचन-काय से अत्यन्त भक्ति भाव से नमस्कार हो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री कुन्थुनाथ जी की टोंक(ज्ञानधर कूट)

कूट ज्ञानधर से कुंथू जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।2।।
कुंथुनाथ जिनराज का, ज्ञानधर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ ,शिखर सम्मेद यजेह।।2।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ज्ञानधरकूट से श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकरादि 96कोड़ाकोड़ी 96 करोड़ 32 लाख, 96 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री नमिनाथ जी की टोंक (मित्रधर कूट)

कूट मित्रधर से नमि जिनवर भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।3।।

नमिनाथ जिनराज का, मित्रधर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ ,शिखर सम्मेद यजेह।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित श्री नमिनाथ तीर्थंकरादि 9कोड़ाकोड़ी 1अरब 45 लाख 7 हजार 942 मुनि मोक्ष पधारे जिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अरहनाथ जी की टोंक (नाटक कूट)

नाटक कूट से अरहनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।4।।
अरहनाथ जिनराज का, नाटक कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।4।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूट से श्री अरहनाथ तीर्थंकरादि 99करोड़ 99 लाख 99 हजार 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास।)

श्री मल्लिनाथ जी की टोंक(संबल कूट)

संबल कूट से मल्लिनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।15।।

मल्लिनाथ जिनराज का, संबल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।15।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संबलकूट से श्री मल्लिनाथ तीर्थंकरादि 99 करोड़ मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संबल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री श्रेयनाथ जी की टोंक(संकुल कूट)

संकुल कूट से श्रेयनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिने भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।16।।

श्रेयनाथ जिनराज का, संकुल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुलकूट से श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकरादि 96कोड़ाकोड़ी 96 करोड़ 96 लाख 9 हजार 542 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संकुल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास।)

श्री पुष्पदंत जी की टोंक (सुप्रभ कूट)

सुप्रभ कूट से पुष्पदंत जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।17।।

पुष्पदंत जिनराज का, सुप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ,शिखर सम्मेद यजेह।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभकूट से श्री पुष्पदंत तीर्थंकरादि 1 कोड़ाकोड़ी 99 लाख 7 हजार 480 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री पद्मप्रभ जी की टोंक(मोहन कूट)

मोहन कूट से पद्मप्रभ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।8।।

पद्मप्रभ जिनराज का, संबल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित मोहनकूट से श्री पदमप्रभु तीर्थंकरादि 99 कोड़ाकोड़ी 87 लाख 43 हजार 727 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की टोंक(निर्जर कूट)

निर्जर कूट से मुनिसुव्रत जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।9।।

मुनिसुव्रत जिनराज का, निर्जर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।9।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित निर्जरकूट से श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकरादि 99कोड़ाकोड़ी 9 करोड़ 99 लाख 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(निर्जर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री चन्द्रप्रभ जी की टोंक (ललित कूट)

ललित कूट से चन्द्रप्रभ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।10।।

चन्द्रप्रभ जिनराज का, ललित कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललितकूट से श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि 9सौ 84 अरब 72 करोड़ 80 लाख 84 हजार 595 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री आदिनाथ जी की टोंक

गिरि कैलाश से आदिनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।11।।

आदिनाथ जिनराज का, गरि कैलाश से जोय।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।11।।

ॐ ह्रीं श्री कैलाश सिद्धक्षेत्र स्थित कूट से माघ सुदी चौदस को श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि10 हजार मुनि सहित मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शीतलनाथ जी की टोंक(विद्युत कूट)

विद्युत कूट से शीतलनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।12।।

शीतलनाथ जिनराज का, विद्युत कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतकूट से श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादि 18 कोड़ाकोड़ी 42 करोड़ 32 लाख 42 हजार 905 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अनंतनाथ जी की टोंक(स्वयंप्रभ कूट)

कूट स्वयंभू से अनंत जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।13।।

अनंतनाथ जिनराज का, कूट स्वयंप्रभ जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।13।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभकूट से श्री अनन्तनाथ तीर्थंकरादि 96 कोड़ाकोड़ी 70 करोड़ 70 लाख 70 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री संभवनाथ जी की टोंक (धवल कूट)

धवल कूट से श्री संभव जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।14।।

संभवनाथ जिनराज का, धवल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवलकूट से श्री सम्भवनाथ तीर्थंकरादि 9 कोड़ाकोड़ी 72 लाख 42 हजार 500 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धवल कूट के दर्शन का फल बयालीस लाख उपवास।)

श्री वासुपूज्य भगवान की टोंक

चंपापुर से वासुपूज्य जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।15।।

वासुपूज्य जिन सिद्ध भये, चंपापुर से जेह।
मन वच तन से पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।15।।

ॐ ह्रीं श्री चम्पापुर सिद्धक्षेत्र से भादवा सुदी चौदस को श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि मंदारगिरि से 1हजार मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री अभिनंदननाथ जी की टोंक(आनंद कूट)

आनंद कूट से अभिनंदन जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।16।।

अभिनंदननाथ जिनराज का, आनंद कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनंदकूट से श्री अभिनन्दन तीर्थंकरादि 72 कोड़ाकोड़ी 72 करोड़ 72 लाख 42 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आनन्द कूट के दर्शन का फल एक लाख उपवास।)

श्री धर्मनाथजी की टोंक(सुदत्तवर कूट)

कूट सुदत्त से धर्मनाथ जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।17।।

धर्मनाथ जिनराज का, सुदत्तवर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुदत्तवरकूट से श्री धर्मनाथ तीर्थंकरादि 29 कोड़ाकोड़ी 19 करोड़ 9 लाख 9 हजार 795 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री सुमतिनाथ जी की टोंक(अविचल कूट)

अविचल कूट से सुमतिनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।18।।

सुमतिनाथ जिनराज का, अविचल कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।18।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचलकूट से श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि 1 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 81 हजार 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अविचल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री शांतिनाथ जी की टोंक(कुंदप्रभ कूट)

कूट कुंदप्रभ से शांती जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।19।।

शांतिनाथ जिनराज का, कुंदप्रभ कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।19।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुन्दप्रभकूट से श्री शांतिनाथ तीर्थंकरादि 9 कोड़ाकोड़ी 9 लाख 9 हजार 999 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(कुन्दप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री महावीर भगवान की टोंक

पावापुर से महावीर जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।20।।

महावीर जिनराज का, पावापुर से जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।20।।

ॐ ह्रीं श्री पावापुर सिद्धक्षेत्र से कार्तिक वदी अमावस को श्री वर्द्धमान तीर्थंकरादि 26 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सुपार्श्वनाथ जी की टोंक(प्रभाष कूट)

प्रभास कूट से जिन सुपार्श्व जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।21।।

सुपार्श्वनाथ जिनराज का, प्रभाष कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।21।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभासकूट से श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकरादि 49 कोड़ाकोड़ी 84 करोड़ 72 लाख 7 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रभास कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री विमलनाथ जी की टोंक(सुवीर कूट)

कूट सुवीर से विमलनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।22।।

विमलनाथ जिनराज का, सुवीर कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।22।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीरकूट से श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि 70 कोड़ाकोड़ी 60 लाख 6 हजार 742 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुवीर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

श्री अजितनाथ जी की टोंक(सिद्धवर कूट)

कूट सिद्धवर अजितनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।23।।

अजितनाथ जिनराज का, कूट सिद्धवर जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।23।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सिद्धवरकूट से श्री अजितनाथ तीर्थंकरादि 1 अरब 80 करोड़ 54 लाख मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सिद्धवर कूट के दर्शन का फल बत्तीस करोड़ उपवास।)

श्री नेमिनाथ भगवान की टोंक

गिरि गिरनार से नेमिनाथ जी भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।24।।

नेमिनाथ जिनराज जी, गिरिनार से जोय।
मन वच तन से पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।24।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कूट से आषाढ़ सुदी सातें को श्री नेमिनाथ तीर्थंकरादि शंबू प्रद्युत्न आदि 72 करोड़ 700 मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(स्वर्णभद्र कूट)श्री पारसनाथ जी की टोंक

स्वर्ण कूट से पारसनाथ जिन भाई रे!।
मोक्ष महापद पाए हैं जिन भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।25।।

पारसनाथ जिनराज का, सुवर्णभद्र कूट है जेह।
मन वच तन कर पूज हूं, शिखर सम्मेद यजेह।।25।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वर्णभद्रकूट से श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकरादि ब्यासी करोड़ चौरासी लाख पैंतालीस हजार सात सौ ब्यालिस मुनि मोक्ष पधारे तिनके चरणारविन्द में अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वर्णभद्र कूट के दर्शन का फल सोलह करोड़ उपवास।)

ॐ ह्रीं जिनमुखोद्भव सरस्वती दे

पूर्वाचार्यश्री शांति सागर
महावीर कीर्ति वीर सिन्धु शि
भरत सिन्धु कुन्थुसागर
पुष्पदन्त गुरु विराग सिन्धुपद,
ॐ ह्रूँ सर्व आचार्य परमेष्ठी चर

दोहा– राही मुक्ती मा
विराग सिंधु अच
ॐ ह्रूँ प.पू. गणाचार्य श्री विरागसा

सम्मेद शिखर जी का पूर्ण अर्घ्य

ऋषी अनंतानंत यहाँ से भाई रे!।
मुक्ती पाकर सिद्ध हुए हैं भाई रे!।।
जिन चरणों में अर्घ्य चढ़ाते भाई रे!।
हम भी मोक्ष महापद पाएँ भाई रे!।।26।।

तीर्थराज सम्मेद पर ,अनुपम कूट हैं जेह।
मन वच तन कर पूज हूँ, शिखर सम्मेद यजेह।।25।।

ॐ ह्रीं तीर्थराज श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री सम्मेद शिखर जी पूजन (संस्कृत)

स्थापना

मालनी छंद

अतुल सुख निधानं, सर्व कल्याण बीजम्।
जनन जलधि पोतं , भव्य सत्वेक पात्रम्।।
दुरित तरु कुठारं, सर्व तीर्थ प्रधानम्।
सम्मेद शिखर पूज्यं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतम्।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणंपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्..

उपजाति छंद

गंगादि तोयैः स्नपयन्ति देवा,यांस्तान्- गिरीशं अनादि सिद्धान्।
यजामि नीरादि भवैर्जलोघैः, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखराय जन्म,जरा,मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

समर्पितैर्-दिव्य सुगंध द्रव्यै, येषां प्रकुर्वन्त्यगराश्च-तेषाम्।
कुर्वेह मंगे वरचंदनाद्यै, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य जन्म, जरा,मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रयी-रक्षत पुण्य पुंजै, या प्रार्चिता देव! गणै जिनार्चा।
तांशालि जातैर्-विमलैर्-यजेऽहं, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अक्षयपद प्राप्ते अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

विनम्र भव्याब्ज विबोध सूर्यान्, एवामरेन्द्रः सुर वृक्ष पुष्पैः।
तान्यर्चयेऽहं वर चंपकाद्यै, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।। 4।।

ॐ ह्रीं श्रीतीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सुधा स्वरूपैश्-चरुभि सुरेशैः, प्राज्याज्य सारैश्- चरुभि रसाढ्यै।
तां पूजयेऽहं शुभ मोदकाद्यैः ,नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।5।।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।
दीपैः कनत्कांचन भाजनस्थै, घृतादि कर्पूर भवैः प्रदीपैः।
निर्वाण क्षेत्रं विदधामि तेषां,नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।6।।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।
स्-वर्गोदभवैश्चरु घटस्थ धूपैर्, यान्देवदेवैर्-महितान्सुतीर्थान्।
तान् संयजे दिव्य सुगंध धूपैः, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।7।।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।
फलैः सुकल्पद्रुमजैः सुरेन्द्रैः, याचर्चिता सत्कृतिभिर्- महेशान्।
तान्मोच चोचादि चयैर्-यजेऽहं , नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।8।।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य मोक्ष पद प्राप्तये फलं निर्व. स्वाहा।
सन्नीर गंधाक्षत पुष्प जातैर्-नैवेद्य दीपामल धूप शुभ्रैः।
फलैर्-विचित्रैर्-घन पुण्ययोगात्,नमामिसम्मेदगिरीन्द्रभक्त्या।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनुष्टुप छंद

नमस्कृत्य सर्वान् सिद्धान् ,तीर्थ स्थान जिनेशिनाम्।
सम्मेद गिरीन्द्र पूज्यं, भक्त्या स्तौमि त्रियोगताः।।
असंख्ययोगिनश् एवं ,विंश तीर्थंकरस्-तथा।
कूटेषु विंशतौ मुक्त्यौ, पूज्यं सर्वान्-नमाम्यहं।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

गणधर कूट का अर्घ्य

गणधरे कूटे मुख्यः ,सकल ज्ञान संयुतैः।
भव पाशच्छिदेऽहं तान्, तत्कूटे च स्तुवे मुदा।।
नृदेव मुनिभिर्-वंद्या , एते सर्वे शिवं ययुः।
विशद तान् च संस्तौमि , दुर्गतिच्छित्तये सह।।1।।

ॐ ह्रीं श्री गणधरकूटे विभिन्न स्थाने मोक्ष प्राप्ते गणधरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानधर कूट (श्री कुंथुनाथ जी की टोंक)

कूटे ज्ञानधरे देव , कुंथुनाथो सुरैर्-नुतः।
शांत्यैशी संस्तुवे नित्यं, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।2।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित ज्ञानधरकूटे षड् नवति कोटाकोटि षड् नवति कोटि द्विचत्वारिंशत् मुनि सहिताय श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

मित्रधर कूट(श्री नमीनाथ जी की टोंक)

कूटे मित्रधरे पूज्यो, नमीनाथः बुधैर्-नुतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।3।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित पंच चत्वारिंशत् लक्ष सप्त सहस्र नव शत द्विचत्वारिंशत् मुनि सहिताय श्री नमिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

नाटक कूट (श्री अरहनाथ जी की टोंक)

नाटक कूटतः स्वामिन्, नरनाथो महर्षिभिः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।4।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूटे नव नवति कोटाकोटि नव लक्ष नव नवति सहस्र नव शत नव नवति मुनि सहिताय श्री अरहनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास।)

संबल कूट (श्री मल्लिनाथ जी की टोंक)

संबल कूटतः मल्ली-नाथ संयम धारकाः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।5।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित संबलकूटे षड् नवति कोटि मुनि सहिताय श्री मल्लिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संबल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

संकुल कूट (श्री श्रेयनाथ जी की टोंक)

संकुल कूटतः अर्हन् , श्रेयनाथ शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।6।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुलकूटे षड् नवति कोटाकोटि षड्नवति कोटि षड्नवति लक्ष नव सहस्र पंच शत् द्विचत्वारिंशत् मुनि सहिताय श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संकुल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास।)

सुप्रभ कूट (श्री पुष्पदंत जी की टोंक)

सुप्रभः कूटतः देव, पुष्पदंतौ शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।7।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभकूटे एक कोटाकोटि नवनवति लक्ष सप्तसहस्र सप्तशत् अशीति मुनि सहिताय श्री पुष्पदंत तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

मोहन कूट (श्री पद्मप्रभ जी की टोंक)

मोहन कूटतः श्री मत् , पद्मप्रभ शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।8।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित मोहनकूटे नव नवति कोटि मुनि सहिताय श्री पद्मप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

निर्जर कूट (श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की टोंक)

निर्जर कूटतः स्वामिन्-सुव्रतः सुव्रतप्रदाः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।9।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित निर्जरकूटे श्री नव नवति कोटाकोटी नवनवति कोटी नवनवति लक्ष नवशत् नवनवति मुनि सहिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(निर्जर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

ललित कूट (श्री चन्द्रप्रभ जी की टोंक)

ललित कूटतः चन्द्र-प्रभो! मोहाद्विषो जयी।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललितकूटे नव शत् चतुरशीति अर्बुद द्विसप्तति कोटि अशीति लक्ष चतुरशीति सहस्र पंचशत् पंच पंचाशत् मुनि सहिताय श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

अष्टापद (श्री आदिनाथ जी की टोंक)

कैलाश गिरितः स्वामी, आदिनाथो शिवं गतः।
दस सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।11।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्रे दश सहस्र मुनि सहिताय श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतवर कूट(श्री शीतलनाथ जी की टोंक)

विद्युतवर कूटतः , श्री शीतल सिद्धिश्रितः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतवर कूटे अष्टादश कोटाकोटि द्विचत्त्वारिंशद् कोटी द्वात्रिंशत लक्ष द्वि चत्वारिंशत् सहस्र नवशत् पंच मुनि सहिताय श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादिं जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

स्वयंप्रभ कूट (श्री अनंतनाथ जी की टोंक)

कूटे स्वयंप्रभानन्त -नाथो ऽनंतास्पदं तथा।
षट् सहस मुनिन्द्रैक युक्, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।13।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभकूटे षड् नवति कोटाकोटि सप्ततिकोटी सप्ततिलक्ष सप्तति सहस्र सप्तशत् पंच मुनि सहिताय श्री अनंतनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(स्वयंप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

धवल कूट (श्री संभवनाथ जी की टोंक)

धवल कूटतः अर्हन्, सम्भवो कर्म हानिता।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवलकूटे नव कोटाकोटी द्वादशलक्ष द्विचत्वारिंशत् पंच शत् मुनि सहिताय श्री संभवनाथ तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धवल कूट के दर्शन का फल बयालीस लाख उपवास।)

(चंपापुर)श्री वासुपूज्य जी की टोंक

मंदार शैल राजे श्री ,वासुपूज्यः शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।15।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत चंपापुर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित एक सहस्र मुनि सहिताय श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद कूट (श्री अभिनंदननाथ जी की टोंक)

आनंद कूटतः देव-रभिनंदन तीर्थकृत्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनंदकूटे द्वा सप्तति कोटाकोटी द्विसप्तति लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्र सप्त शत् मुनि सहिताय श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(आनन्द कूट के दर्शन का फल एक लाख उपवास।)

सुदत्तवर कूट(श्री धर्मनाथ जी की टोंक)

सुदत्त कूटतः धर्म-नाथो, धर्मेक चक्रयुत्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुदत्तकूटे एकोनत्रिंशत कोटाकोटी एकोनविंशति कोटी नवति सहस्र सप्तशत् पंचनवति मुनि सहिताय श्री धर्मनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुदत्तवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

अविचल कूट (श्री सुमतिनाथ जी की टोंक)

अविचल कूटे श्रीमत् ,सुमतिः सन्मति प्रदः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।18।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचलकूटे एक कोटाकोटी चतुरशीति कोटी द्विसप्तति लक्ष एकाशीति सहस्र सप्तशत्(एकाशीति)मुनि सहिताय श्री सुमतिनाथ तीर्थंकर जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(अविचल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

कुंदप्रभ कूट (श्री शांतिनाथ जी की टोंक)

कूटे कुंदप्रभः शांती, जिनो स्मर पाशभित्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।19।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुंदप्रभकूटे नव कोटाकोटी नवलक्ष नवसहस्र नवशत् नवनवति मुनि सहिताय श्रीशांतिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

(कुन्दप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

पावापुर(श्री महावीर स्वामी जी का अर्घ्य)

सरोवरे पावापुर्याः, महावीरः शिवं गतः।
षड् विंशति मुनीन्द्राश्च, सिद्धिं सर्वान् नमामि तान्।।20।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत पावापुर सिद्धक्षेत्र षड् विंशति मुनि सहिताय श्री महावीर तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभाष कूट (श्री सुपार्श्वनाथ जी की टोंक)

प्रभाष कूटतः देवः , श्री सुपार्श्व शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।21।।

(प्रभास कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभासकूटे एकोनपंचाशत् कोटाकोटी चतुरशीति कोटी द्विसप्तति लक्ष सप्तसहस्र सप्तशत् द्विचत्वारिंशत् मुनि सहित श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवीर कूट (श्री विमलनाथ जी की टोंक)

सुवीर कूटतः अर्हन् , विमलनाथ शिवं गतः ।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।22।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीरकूटे सप्तति कोटाकोटी षष्टिलक्ष नवसहस्र सप्तशत् द्विचत्वारिंशद् मुनि सहिताय श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुवीर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

सिद्धवर कूट (श्री अजितनाथ जी की टोंक)

कूटे सिद्धवर श्रीमान् , अजिते स्मर पाशभित्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।23।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धवर कूटतः एक अर्बुद अशीति कोटि अष्ट पंचाशत् लक्ष मुनि सहिताय श्री अजितनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

(सिद्धवर कूट के दर्शन का फल बत्तीस करोड़ उपवास।)

गिरनार (नेमिनाथ जी की टोंक)

गिरवरे ऊर्जयंते , नेमिनाथ बुधैर्-नुतः।
कोट्यो द्विसप्तति साधु, सप्त शत् शिवंगतः।।24।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार पर्वत सिद्धक्षेत्र द्विसप्तति कोटी सप्तशत् मुनि सहिताय श्री नेमिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वस्वाहा।

स्वर्णभद्र कूट(श्री पारसनाथ जी की टोंक)

स्वर्णभद्र कूटे श्रीमत्, पार्श्व नाथो शिवं गतः।
त्रिंशत मुनियुड् मुक्ती , वधू लेभे नमामि तान्।।25।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत द्विअशीति कोटी चतुरशीति लक्ष पंच चत्वारिंशद् सहस्र सप्तशत् द्विचत्वारिंशद् मुनि सहिताय श्री पारसनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वस्वाहा।

(स्वर्णभद्र कूट के दर्शन का फल सोलह करोड़ उपवास।)

जयमाल

अनाद्येऽनिधन-स्यास्य, महात्म्य केन वर्ण्यते।
भव्या एव प्रवंद्यंते , नामव्यैर्-वर्धते कदा।।

तोटक छंद

सुर खेचर किन्नर देव-गमं, यत्रागत चरण मुनीन्द्ररणं।
नाना सुभगा सुमनं प्रसरं, वंदे गिरिराज-महं विशदं।।1।।
तरुभूषित पार्श्व युगं सलयं, निर्वाण भूमि अतिशय सुभगं।
जिनवर मंगल गुण गण निचयं,वंदे गिरिराज- महं विशदं।।2।।
अति भक्ति भाव भावित सुनगं, शंश्रित सुर नर कृत धन भोगं।
संभव भुव जल गुण शुभ प्रकरं, वंदे गिरिराज- महं विशदं।।3।।
मद खेद महीधर नाश पवि, भय भीम निशाचर चारु रवि।
गुणराजि विराजित भाव महं, वंदे गिरिराज- महं विशदं।।4।।
व्यतीत विकल्प समूहरणं , भुवि भस्मित कर्माधनाग्नि गणं।
सुरराज नराधिप शेषनुतम्, वंदे गिरिराज -महं विशदं।।5।।

उपजाति छंद

अनंत सौख्यामृत कूप रूपं, त्रिलोक पूज्यं विशदं पवित्रं।
निर्वाण भू शाश्वत सर्वलोके , मुनीन्द्र वद्यं भव ताप मुक्तं।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुद्धोपयोग उपलब्ध मनंत सौख्य।
शुद्धात्म सार मुररी कृत-मात्म विद्धि।।
सन्मुक्ति संवरण -मदभुत- मादरेण।
सम्मेद शैल कुसुमांजलि नाधि नौमिं।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री स्वर्ण भद्र कूट चालीसा

दोहा- शीश नवा श्री पार्श्व को, गणधर करुँ प्रणाम।
शाश्वत तीरथराज है, सिद्धों का शिव धाम।।
स्वर्णभद्र शुभ कूट का, चालीसा शुभकार।
चरण वंदना कर यहाँ, गाते बारंबार।।

चौपाई

मध्यलोक के मध्य में भाई, जंबूद्वीप रहा शुभदाई।।1।।
जिसके मध्य मेरु शुभ जानो, भरत क्षेत्र दक्षिण में मानो।।2।।
आर्य खंड जिसमें शुभकारी, भारत देश रहा मनहारी।।3।।
झारखंड शुभ प्रांत कहाए, जिला गिरीडीह जिसमें आए।।4।।
श्री सम्मेद शिखर शुभकारी, जिसकी छटा रही मनहारी।।5।।
जो निर्वाण क्षेत्र कहलाए, मुनिवर जहाँ पे ध्यान लगाए।। 6।।
किए तपस्या जो अतिशायी, कर्म निर्जरा जिससे पाई।।7।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, हुए भूत में मंगलकारी।।8।।
अन्य मुनीश्वर पावन गाए, इसी क्षेत्र से शिव पद पाए।।9।।
इस कालिक चौबीसी जानो, ऋषभादिक तीर्थंकर मानो।।10।।
जिनमें बीस तीर्थंकर गाए, इसी क्षेत्र से शिव पद पाए।।11।।
हुण्डावसर्पिणी काल ये गाया, जिसकी है कुछ ऐसी माया।।12।।
आदिनाथ अष्टापद जानो, वासुपूज्य चंपापुर मानो।।13।।
नेमी जिन गिरनार कहाए, महावीर पावापुर पाए।।14।।
शेष जिनेश्वर शिव पद गामी, अन्य मुनीश्वर अंर्तयामी।।15।।

इसी तीर्थ से मोक्ष सिधाए, यह निर्वाण क्षेत्र कहलाए।।16।।
पार्श्व प्रभू उपसर्ग विजेता, हुए आप कर्मों के जेता।।17।।
नाग नागिनी जो कहलाए, महामंत्र प्रभु जिन्हें सुनाए।।18।।
धरणेन्द्र पद्मावति कहलाए, देव सुगति के सुख जो पाए।।19।।
प्रभु ने संयम को अपनाया, निज आतम का ध्यान लगाया।।20।।
कमठ घूमते वहाँ पे आया, देख प्रभु को बैर जगाया।।21।।
तब उपसर्ग कमठ ने ढाया, मर्म धर्म का जान न पाया।।23।।
देवों ने उपसर्ग हटाया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।।24।।
समवशरण तव देव बनाए, देव इन्द्र जयकार लगााए।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, श्रद्धा ज्ञान जीव कई पाए।।26।।
संयम जीवन में अपनाए, केवलज्ञान जीव प्रगटाए।।27।।
गणधर दश प्रभु के कहलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।28।।
श्री सम्मेदशिखर कहलाए, स्वर्णभद्र शुभ कूट कहाए।।29।।
कर बिहार प्रभु जहाँ पे आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।30।।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अंर्तयामी।।32।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी पाए, खड्गासन से मोक्ष सिधाए।।32।।
सुर नर पशु जिनके गुण गाते, भक्ति भाव से शीश झुकाते।।33।।
यात्री दूर दूर से आते, प्रभु की जय जयकार लगाते।।34।।
गाते हैं कई भजनावलियाँ,खिलती हैं जन मन की कलियाँ।।35।।
पूजा कोई विधान रचाते, आरती करके छत्र चढ़ाते ।।36।।
मम् सौभाग्य उदय में आया, तीर्थराज का दर्शन पाया।।37।।

प्रभु की महिमा है अतिशायी, जीवों को हर सौख्य प्रदायी।।38।।
योग साधना करते योगी, स्वास्थ्य लाभ पाते हैं रोगी।।39।।
अज्ञानी सद्ज्ञान जगावें, भोगी भोग संपदा पावें ।।40।।

दोहा- स्वर्णभद्र शुभ कूट का , चालीसा शुभकार।
सम्मेदशिखर शुभ तीर्थ की, महिमा अपरंपार।।
सुख शांती सौभाग्य हो, स्वजन होंय अनुकूल।
दीन दरिद्री जो विशद, पॉए सिद्धिया मूल।।

जाप-ॐ ह्रीं तीर्थराज श्री सम्मेद शिखराय नमः।

• • • • • • • • • • • • •

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

पारसनाथ भगवान, आज थारी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ थारी मूरत निहारें, कर दे भव से पार...अज थारी
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।
जन्में हैं काशीराज-आज थारी.....।।1।।
बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्न विनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज आज थारी.....।।2।।
नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार- आज थारी.....।।3।।
दीन बन्धु हे! केवलज्ञानी, भव-दुःखहर्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार- आज थारी.....।।4।।
"विशद" आरती लेकर आये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन-जन के सुखकार- आज थारी.....।।5।।

श्री सम्मेद शिखर सिद्धक्षेत्र तीर्थ वंदना

श्री सम्मेदशिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
इस धरती अंबर की जय हो, शाश्वत तीर्थ क्षेत्र की जय हो॥

दोहा- शाश्वत तीर्थ महान्, पूज्य रहा इस लोक में।
करते चरण प्रणाम, हुए सिद्ध जो भी विशद॥

तर्ज- यह देश है वीर जवानों का———

यह तीर्थ है जिन अर्हंतों का, जो मोक्ष पधारे सिद्धों का ।
जय जय जय हो.....॥
यह तीर्थ है गुरू निर्ग्रन्थों का, जिन परमेष्ठी भगवंतों का ।
जय जय जय हो.....॥

गणधर कूट की जय बोलें, जिन की भक्ति में डोलें ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो———॥1॥
यहॉ कूट ज्ञानधर है भाई, श्री कुंथुनाथ का शिवदायी ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहॉ से मोक्ष गये ॥
यहॉ नमीनाथ जी शिव पाए, यह कूट मित्रधर कहलाए ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥2॥
यहॉ नाटक कूट शुभ कहलाए, श्री अरहनाथ शिवपद पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहॉ से मोक्ष गये ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥3॥
यहॉ संकुल कूट है मनहारी, श्रेयांसनाथ का शिवकारी ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहॉ से मोक्ष गये ॥

यहाँ पुष्पदंत जिनवर आए, जो सुप्रभ कूट से शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥4॥
यहाँ मोहन कूट मुक्तीदायी, श्री पद्म प्रभु जी का भाई ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥4॥
यहाँ निर्जर कूट भी कहलाए, श्री मुनिसुव्रत जी शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो——॥
है ललित कूट मंगलकारी, श्री चन्द्रप्रभु का शिवकारी ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥5॥
श्री आदिनाथ जी कहलाए, जो अष्टापद से शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥6॥
यहाँ कूट स्वयंभू कहलाए, श्री जिनानंत जी शिव पद पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥7॥
यहाँ विद्युत कूट भी है भाई, श्री शीतलनाथ का शिवदाई ।
है धबल कूट शुभ धबल यहाँ, श्री संभव जिन शिव पाएँ जहाँ ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥8॥

श्री वासुपूज्य जी कहलाए, जो चंपापुर से शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो——।9।।
श्री अभिनंदन जिनराज कहे, जो आनंद कूट से मोक्ष गये ।
प्रभु धर्मनाथ जी कहलाए ,जो सुदत्तकूट से शिव पाए ॥
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो——॥10।।
श्री सुमतिनाथ जी कहलाए, जो अविचल कूट से शिव पाए ।
श्री कूट कुंदप्रभ फिर आए, श्री शांतिनाथ मुक्ती पाए ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥11॥
श्री पावापुर जी कहलाए, श्री वीर प्रभु शिव पद पाए ।
शुभ कूट प्रभास कहा जाए, जिनवर सुपार्श्व शिव पद पाए ॥12॥
श्री विमलनाथ जिनवर स्वामी, हुए कूट सुवीर से शिवगामी।
फिर कूट सिद्धवर जी आए, श्री अजितनाथ शिवपद पाए ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥13॥
श्री नेमिनाथ जी कर्म क्षये, गिरि उर्जयंत से मोक्ष गये ।
है स्वर्णभद्र शुभकर भाई, श्री पार्श्वनाथ का शिवदायी।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो——॥
दोहा- तीर्थराज की वंदना, होके भाव विभोर ।
करे भाव से जो 'विशद', बढ़े मोक्ष की ओर ॥

।। लघु।। निर्वाण काण्ड

।।सोरठा।।

पावन भू निर्वाण ,पूज्य कही इस लोक में।
पाने शिव सोपान, विशद पूजते जगत जन ।।

।। चाल-छन्द।।

जिन आदीश्वर कहलाए, अष्टापद से शिव पाए ।
चम्पापुर धाम बनाए, प्रभु वासुपूज्य कहलाए ।।1।।
श्री नेमिनाथ गिरनारी, से हुए आप शिवकारी ।
श्री वीर प्रभू शिव पाए,पावापुर धन्य बनाए।।2।।
जिन बीस मोक्ष पद पाए, सम्मेद शिखर कहलाए।
निर्वाण क्षेत्र जो गाए, वे जगत पूज्य कहलाए।।3।।
मुनि नगर तारवर आए, वरदत्तादि शिव पाए।
शम्बू प्रद्युम्न सब भाई, गिरनार से मुक्ती पाई।।4।।
लवकुश आदिक जो गाए, पावागिर से शिव पाए।
त्रय पाण्डव आदिक जानो, शिव शत्रुंजय से मानो।।5।।
बलभद्र आदि शिव पाए, गजपंथ से मोक्ष सिधाए।
हनू राम नीलादिक सारे, तुंगी से मोक्ष सिधारे।। 6।।
नंगादि पंच कहाए, सोनागिर से शिव पाए।
रावण सुत आदि कुमारा, रेवातट से शिव धारा।। 7।।

फिर कूट सिद्धवर आए, चक्रीद्वय शिव पद पाए।
कुम्भ इन्द कर्ण जित मानो, शिव बड़वानी से जानो।।8।।
मुनि स्वर्ण भद्रादि कहाए, पावागिर से शिव पाए।
गुरुदत्तादिक मुनि सारे, दोणागिर से शिव धारे।।9।।
बालादिक नाग कुमारा, अष्टापद से शिव धारा।
मुनि साढ़े तीन करोड़ी, मेढ़ागिर से शिव जोड़ी ।।10।।
कुलभूषण आदि मुनीशा,शिव कुन्थलगिरि के शीशा।
जसरथ सुत कलिंग कहाए, शिव कोटि शिला से पाए।।11।।
वरदत्तादिक पंच ऋशीषा, रैशिन्दगिर के शीशा।
मथुरा उद्यान कहाए, जम्बू स्वामी शिव पाए।।12।।
निर्वाण जहां जिन पाए, निर्वाण क्षेत्र कहलाए।
त्रय लोक में तीर्थ जो सारे, वे हैं सब पूज्य हमारे ।।13।।
हम श्री जिन महिमा गाते, निर्वाण क्षेत्र सब ध्याते ।
यह 'विशद' भावना भाएं, हम भी शिव पद को पाएं।।14।।
सोरठा- पाए पद निर्वाण, संयम के धारी ऋषी।
हो जाए कल्याण, महिमा गाते हम 'विशद' ।।

राह दिखाये मोक्ष की ,तारण तरण जहाज।
तीन योग से पूजते, श्री जिन पद हम आज।।

सम्मेद शिखर विधान

श्री सम्मेद शिखर सिद्धश्रेत्र तीर्थ वंदना

श्री सम्मेदशिखर की जय हो, मुक्त हुए जिनवर की जय हो।
इस धरती अंबर की जय हो, शाश्वत तीर्थ क्षेत्र की जय हो॥

दोहा- शाश्वत तीर्थ महान्, पूज्य रहा इस लोक में।
करते चरण प्रणाम, हुए सिद्ध जो भी विशद॥

तर्ज- यह देश है वीर जवानों का———

यह तीर्थ है जिन अर्हंतों का, जो मोक्ष पधारे सिद्धों का ।
जय जय जय हो........॥

;g rhFkZgSx#q fuxZFkksd k] ftu ije'Bh Hkx oa ksd k A
t ; t ; t ; gks]]]]AA
x .k/kj dW dh t ; ckys]s ftu dh HkfDr esaM kys]s A
t ; gks&t ; gks&t ; gks&t ; gks&t ; gks&&&&&&AA1AA
;gkWdW Kku/kj gSHkkbZ Jh dEkqqkFk dk f'konk;h A
iEkqv iusl kjsd eZ{k;s d bZl a ;gkWl sek{k x;sAA
;gkWuehukFk th f'ko ik,] ;g dW fe=/kj dgyk, A
t ; gks&t ; gks&t ; gks&t ; gks&t ; gks&AA2AA
;gkWukVd dW 'kEk dgyk,] Jh vjgukFk f'koin ik, A
iEkqv iusl kjsd eZ{k;s d bZl a ;gkWl sek{k x;sA
t ; gks&t ; gks&t ; gks&t ; gks&AA3AA
;gkWl dy dW gSeugkjh] J;kla ukFk dk f'kod kjh A
iEkqv iusl kjsd eZ{k;s d bZl a ;gkWl sek{k गये ॥

यहाँ पुष्पदंत जिनवर आए, जो सुप्रभ कूट से शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥4॥
यहाँ मोहन कूट मुक्तीदायी, श्री पद्म प्रभु जी का भाई ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥4॥
यहाँ निर्जर कूट भी कहलाए, श्री मुनिसुव्रत जी शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो——॥
है ललित कूट मंगलकारी, श्री चन्द्रप्रभु का शिवकारी ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥5॥
श्री आदिनाथ जी कहलाए, जो अष्टापद से शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥6॥
यहाँ कूट स्वयंभू कहलाए, श्री जिनानंत जी शिव पद पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥7॥
यहाँ विद्युत कूट भी है भाई, श्री शीतलनाथ का शिवदाई ।
है धवल कूट शुभ धवल यहाँ, श्री संभव जिन शिव पाएँ जहाँ ॥
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-॥8॥

श्री वासुपूज्य जी कहलाए, जो चंपापुर से शिव पाए ।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो——।9।।
श्री अभिनंदन जिनराज कहे, जो आनंद कूट से मोक्ष गये ।
प्रभु धर्मनाथ जी कहलाए ,जो सुदत्तकूट से शिव पाए ।।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो——।।10।।
श्री सुमतिनाथ जी कहलाए, जो अविचल कूट से शिव पाए ।
श्री कूट कुंदप्रभ फिर आए, श्री शांतिनाथ मुक्ती पाए ।।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-।। 11।।
श्री पावापुर जी कहलाए, श्री वीर प्रभु शिव पद पाए ।
शुभ कूट प्रभास कहा जाए, जिनवर सुपार्श्व शिव पद पाए ।।12।।
श्री विमलनाथ जिनवर स्वामी, हुए कूट सुवीर से शिवगामी।
फिर कूट सिद्धवर जी आए, श्री अजितनाथ शिवपद पाए ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-।। 13।।
श्री नेमिनाथ जी कर्म क्षये, गिरि ऊर्जयंत से मोक्ष गये ।
है स्वर्णभद्र शुभकर भाई, श्री पार्श्वनाथ का शिवदायी।
प्रभु अपने सारे कर्म क्षये, कई संत यहाँ से मोक्ष गये ।
जय हो-जय हो-जय हो-जय हो-जय हो——।।
दोहा- तीर्थराज की वंदना, होके भाव विभोर ।
करे भाव से जो 'विशद', बढ़े मोक्ष की ओर ।।

।। लघु।। निर्वाण काण्ड

।।सोरठा।।

पावन भू निर्वाण ,पूज्य कही इस लोक में।
पाने शिव सोपान, विशद पूजते जगत जन ।।

।। चाल-छन्द।।

जिन आदीश्वर कहलाए, अष्टापद से शिव पाए ।
चम्पापुर धाम बनाए, प्रभु वासुपूज्य कहलाए ।।1।।
श्री नेमिनाथ गिरनारी, से हुए आप शिवकारी ।
श्री वीर प्रभू शिव पाए,पावापुर धन्य बनाए।।2।।
जिन बीस मोक्ष पद पाए, सम्मेद शिखर कहलाए।
निर्वाण क्षेत्र जो गाए, वे जगत पूज्य कहलाए।।3।।
मुनि नगर तारवर आए, वरदत्तादि शिव पाए।
शम्बू प्रद्युम्न सब भाई, गिरनार से मुक्ती पाई।।4।।
लवकुश आदिक जो गाए, पावागिर से शिव पाए।
त्रय पाण्डव आदिक जानो, शिव शत्रुंजय से मानो।।5।।
बलभद आदि शिव पाए, गजपंथ से मोक्ष सिधाए।
हनू राम नीलादिक सारे, तुंगी से मोक्ष सिधारे।। 6।।
नंगादि पंच कहाए, सोनागिर से शिव पाए।
रावण सुत आदि कुमारा, रेवातट से शिव धारा।। 7।।
फिर कूट सिद्धवर आए, चक्रीद्वय शिव पद पाए।
कुम्भ इन्द्र कर्ण जित मानो, शिव बड़वानी से जानो।।8।।

मुनि स्वर्ण भद्रादि कहाए, पावागिर से शिव पाए।
गुरुदत्तादिक मुनि सारे, द्रोणागिर से शिव धारे।।9।।
बालादिक नाग कुमारा, अष्टापद से शिव धारा।
मुनि साढ़े तीन करोड़ी, मेढ़ागिर से शिव जोड़ी ।।10।।
कुलभूषण आदि मुनीशा,शिव कुन्थलगिरि के शीशा।
जसरथ सुत कलिंग कहाए, शिव कोटि शिला से पाए।।11।।
वरदत्तादिक पंच ऋशीषा, रैशिन्दगिर के शीशा।
मथुरा उद्यान कहाए, जम्बू स्वामी शिव पाए।।12।।
निर्वाण जहां जिन पाए, निर्वाण क्षेत्र कहलाए।
त्रय लोक में तीर्थ जो सारे, वे हैं सब पूज्य हमारे ।।13।।
हम श्री जिन महिमा गाते, निर्वाण क्षेत्र सब ध्याते ।
यह 'विशद' भावना भाएं, हम भी शिव पद को पाएं।।14।।
सोरठा- पाए पद निर्वाण, संयम के धारी ऋषी।
हो जाए कल्याण, महिमा गाते हम 'विशद'

राह दिखाये मोक्ष की ,तारण तरण जहाज।
तीन योग से पूजते, श्री जिन पद हम आज।।

श्री पुष्पदंत भगवान की आरती
तर्ज- हे तीन लोक के नाथ----------
श्री पुष्पदंत भगवान, करो कल्याण, जगत का स्वामी।
तुम हो प्रभु अन्तर्यामी--------।।
पूरब में तुमने पुण्य किया, जिसका फल आगे आप लिया।
तीर्थकर प्रकृति जिसकी रही निशानी।
तुम हो-----।।1।।
स्वर्गो के भोग दिव्य पाए, चयकर मानव गति में आए।
वे भी तुमने त्यागे सारे शिवगामी।।
तुम हो-----।।2।।
जयरामा माता के जाए, सुग्रीव पिता जिनके गाए।
काकंदी नगरी जन्म लिए,अभिरामी।।
तुम हो-----।।3।।
युवराज राज पद तुम पाए, किंतू न तुमको वे भाए।
तज कर्म घातिया हो गये, केवलज्ञानी।।
तुम हो-----।।4।।
सम्मेद शिखर जी प्रभु आए, श्री सुप्रभ कूट से शिव पाए।
हम करते जिन पद आरति, कर प्रणमामी।
तुम हो-----।।5।।

श्री सम्मेद शिखर जी पूजन संस्कृत

स्थापना

मालनी छंद

अतुल सुख निधानं, सर्व कल्याण बीजम्।
जनन जलधि पोतं , भव्य सत्वेक पात्रम्।।
दुरित तरु कुठारं, सर्व तीर्थ प्रधानम्।
सम्मेद शिखर पूज्यं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतम्।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अत्र अवतर-अवतर संवौषट् आह्वानन्। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं। अत्र मम् सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधिकरणंपुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्..

उपजाति छंद

गंगादि तोयैः स्नपयन्ति देवा,यांस्तान्- गिरीशं अनादि सिद्धान्।
यजामि नीरादि भवैर्जलोघैः, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।1।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखराय जन्म,जरा,मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

समर्पितैर्-दिव्य सुगंध द्रव्यै, येषां प्रकुर्वन्त्यगराश्च-तेषाम्।
कुर्वेह मंगे वरचंदनाद्यै, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।। 2।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य जन्म, जरा,मृत्यु विनाशनाय जलं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रयी-रक्षत पुण्य पुंजै, या प्रार्चिता देव! गणै जिनार्चा।
तांशालि जातैर्-विमलैर्-यजेऽहं, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।3।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अक्षयपद प्राप्ते अक्षतान् निर्व. स्वाहा।

विनम्र भव्याब्ज विबोध सूर्यान्, एवामरेन्द्रः सुर वृक्ष पुष्पैः।
तान्यर्चयेहं वर चंपकाद्यै, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।4।।

नोट जहा नीचे लाइन है वहां खंडाकार एस बनाना है

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य कामबाण विध्वंशनाय पुष्पं निर्व. स्वाहा।

सुधा स्वरूपैश्-चरुभि सुरेशैः, प्राज्याज्य सारैश्- चरुभि रसाढ्यै।
तां पूजयेअहं शुभ मोदकाद्यैः ,नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।5।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्व. स्वाहा।

दीपैः कनत्कांचन भाजनस्थै, घृतादि कर्पूर भवैः प्रदीपैः।
निर्वाण क्षेत्रं विदधामि तेषां,नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।6।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्व. स्वाहा।

स्-वर्गोदभवैश्चरु घटस्थ धूपैर्, यान्देवदेवैर्-महितान्सुतीर्थान्।
तान् संयजे दिव्य सुगंध धूपैः, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।7।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अष्टकर्म दहनाय धूपं निर्व. स्वाहा।

फलैः सुकल्पद्रुमजैः सुरेन्द्रैः, याचर्चिता सत्कृतिभिर्- महेशान्।
तान्मोच चोचादि चयैर्-यजेअहं, नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।8।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य मोक्ष पद प्राप्तये

फलं निर्व. स्वाहा।

सन्नीर गंधाक्षत पुष्प जातैर्-नैवेद्य दीपामल धूप शुभ्रैः।
फलैर्-विचित्रैर्-घन पुण्य योगात्,नमामि सम्मेद गिरीन्द्र भक्त्या।।9।।

ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य अनर्घ्य पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

अनुष्टुप छंद

नमस्कृत्य सर्वान् सिद्धान्,तीर्थ स्थान जिनेशिनाम्।
सम्मेद गिरीन्द्र पूज्यं, भक्त्या स्तौमि त्रियोगताः।।
असंख्ययोगिनश् एवं ,विंश तीर्थंकरस्-तथा।
कूटेषु विंशतौ मुक्त्यौ, पूज्यं सर्वान्-नमाम्यहं।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

अर्घ्यावली

गणधर कूट का अर्घ्य

गणधरे कूटे मुख्यः ,सकल ज्ञान संयुतैः।
भव पाशच्छिदेअहं तान्, तत्कूटे च स्तुवे मुदा।।
नृदेव मुनिभिर्-वंद्या , एते सर्वे शिवं ययुः।

विशद तान् च संस्तौमि , दुर्गतिच्छित्तये सह ।।1 ।।

ॐ ह्रीं श्री गणधरकूटे विभिन्न स्थाने मोक्ष प्राप्ते गणधरेभ्यो जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानधर कूट (श्री कुंथुनाथ जी की टोक)

कूटे ज्ञानधरे देव , कुंथुनाथो सुरैर्-नुतः।
शांत्यैशी संस्तुवे नित्यं, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।2 ।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित ज्ञानधरकूटे षड् नवति कोट्याकोटि षड् नवति कोटि द्विचत्वारिंशत् मुनि सहित श्री कुन्थुनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ज्ञानधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

मित्रधर कूट(श्री नमीनाथ जी की टोक)?

कूटे मित्रधरे पूज्यो, नमीनाथः बुधैर्-नुतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।3 ।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित पंच चत्वारिंशत् लक्ष सप्त सहस्र नव शत द्विचत्वारिंशत् मुनि सहित श्री

नमिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मित्रधर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

नाटक कूट (श्री अरहनाथ जी की टोक)

नाटक कूटतः स्वामिन्, नरनाथो महर्षिभिः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।4 ।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित नाटक कूटे नव नवति कोट्याकोटि नव लक्ष नव नवति सहस्र नव शत नव नवति मुनि सहित श्री अरहनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(नाटक कूट के दर्शन का फल छियानवे करोड़ उपवास।)

संबल कूट (श्री मल्लिनाथ जी की टोक)

संबल कूटतः मल्ली-नाथ संयम धारकाः।

साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।5 ।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित संबलकूटे षड् नवति कोटि मुनि सहित श्री मल्लिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संबल कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

संकुल कूट (श्री श्रेयनाथ जी की टोक)

संकुल कूटतः अर्हन् , श्रेयनाथ शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।6।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित संकुलकूटे षड् नवति कोटाकोटि षड्नवति कोटि षड्नवति लक्ष नव सहस्र पंच शत् द्विचत्वारिंशत् मुनि सहित श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(संकुल नामक कूट के दर्शन का फल एक करोड़ प्रोषध उपवास।)

सुप्रभ कूट (श्री पुष्पदंत जी की टोक)

सुप्रभः कूटतः देव , पुष्पदंतौ शिवं गतः।

साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।7।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुप्रभकूटे एक कोटाकोटि नवनवति लक्ष सप्तसहस्र सप्तशत् अशीति मुनि सहित श्री पुष्पदंत तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(सुप्रभ कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

मोहन कूट (श्री पद्मप्रभ जी की टोक)

मोहन कूटतः श्री मत् , पद्मप्रभ शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।8।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित मोहनकूटे नव नवति कोटि मुनि सहिताय श्री पद्मप्रभ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(मोहन कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

निर्जर कूट (श्री मुनिसुव्रतनाथ जी की टोक)

निर्जर कूटतः स्वामिन्-सुव्रतः सुव्रतप्रदाः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।9।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र स्थित निर्जरकूटे श्री नव नवति कोटाकोटी नवनवति कोटी नवनवति लक्ष नवशत् नवनवति मुनि सहिताय श्री मुनिसुव्रतनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं

निर्वपामीति स्वाहा।

(निर्जर नामक कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

ललित कूट (श्री चन्द्रप्रभ जी की टोक)

ललित कूटतः चन्द्र-प्रभो! मोहाद्विषो जयी।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।10।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित ललितकूटे नव शत् चतुरशीति अर्बुद द्विसप्तति कोटि अशीति लक्ष चतुरशीति सहस्र पंचशत् पंच पंचाशत् मुनि सहिताय श्री चन्द्रप्रभु तीर्थंकरादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(ललित कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

(अष्टापद)श्री आदिनाथ जी की टोक

कैलाश गिरितः स्वामी, आदिनाथो शिवं गतः।
दस सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।11।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कैलाश पर्वत सिद्धक्षेत्रे दश सहस्र मुनि सहिताय श्री आदिनाथ तीर्थंकरादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युतवर कूट(श्री शीतलनाथ जी की टोक)

विद्युतवर कूटतः , श्री शीतल सिद्धिश्रितः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।12।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित विद्युतवर कूटे अष्टादश कोटाकोटि द्विचत्त्वारिंशद् कोटी द्वात्रिंशत लक्ष द्वि चत्वारिंशत् सहस्र नवशत् पंच मुनि सहिताय श्री शीतलनाथ तीर्थंकरादिं जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(विद्युतवर कूट के दर्शन का फल एक करोड़ उपवास।)

स्वयंप्रभ कूट (श्री अनंतनाथ जी की टोक)

कूटे स्वयंप्रभानन्त -नाथोअनंतास्पदं तथा।
षट् सहस मुनिन्द्रेयुक्, वंदेभक्त्याशिवाप्तये।।13।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित स्वयंप्रभाकूटे षड् नवति कोटाकोटि सप्ततिकोटी सप्ततिलक्ष सप्तति सहस्र सप्तशत् पंच मुनि सहिता श्री अनंतनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धवल कूट (श्री संभवनाथ जी की टोक)

धवल कूटतः अर्हन्, सम्भवो कर्म हानिता।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।14।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित धवलकूटे नव कोटाकोटी द्वादशलक्ष द्विचत्वारिंशत् पंच शत् मुनि सहिताय श्री संभवनाथ तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(धवल कूट के दर्शन का फल ब्यालीस लाख उपवास)

(चंपापुर)श्री वासुपूज्य जी की टोक

मंदार शैल राजे श्री ,वासुपूज्यः शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।15।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत चंपापुर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित एक सहस्र मुनि सहिताय श्री वासुपूज्य तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आनंद कूट (श्री अभिनंदननाथ जी की टोक)

आनंद कूटतः देव-रभिनंदन तीर्थकृत्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।16।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित आनंदकूटे द्वा

सप्तति कोटाकोटी द्विसप्तति लक्ष द्विचत्वारिंशत् सहस्र सप्त शत् मुनि सहिताय श्री अभिनंदननाथ तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुदत्तवर कूट(श्री धर्मनाथ जी की टोक)

सुदत्त कूटतः धर्म-नाथो, धर्मेक चक्रयुत्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।17।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुदत्तकूटे एकोनत्रिंशत कोटाकोटी एकोनविंशति कोटी नवति सहस्र सप्तशत् पंचनवति मुनि सहित श्री धर्मनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अविचल कूट (श्री सुमतिनाथ जी की टोक)

अविचल कूटे श्रीमत् ,सुमतिः सन्मति प्रदः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।18।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित अविचलकूटे एक कोटाकोटी चतुरशीति कोटी द्विसप्तति लक्ष एकाशीति सहस्र सप्तशत्(एकाशीति) मुनि सहित श्री सुमतिनाथ तीर्थंकरादि

जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कुंदप्रभ कूट (श्री शांतिनाथ जी की टोक)

कूटे कुंदप्रभः शांती, जिनो स्मर पाशभित्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।19।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित कुंदप्रभकूटे नव कोटाकोटी नवलक्ष नवसहस्र नवशत् नवनवति मुनि सहित श्री शांतिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(पावापुर)श्री महावीर स्वामी जी का अर्घ्य

सरोवरे पावापुर्याः ,महावीरः शिवं गतः।
षड्विंशति मुनीन्द्राश्च, सिद्धिंसर्वान्नमामितान्।।20।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत पावापुर सिद्धक्षेत्र षड् विंशति मुनि सहिताय श्री महावीर तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभाष कूट (श्री सुपार्श्वनाथ जी की टोक)

प्रभाष कूटतः देवः , श्री सुपार्श्व शिवं गतः।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।21।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित प्रभासकूटे एकोनपंचाशत् कोटाकोटी चतुरशीति कोटी द्विसप्तति लक्ष सप्तसहस सप्तशत् द्विचत्वारिंशत् मुनि सहित श्री सुपार्श्वनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुवीर कूट (श्री विमलनाथ जी की टोक)

सुवीर कूटतः अर्हन् , विमलनाथ शिवं गतः ।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।22।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत स्थित सुवीरकूटे सप्तति कोटाकोटी षष्टिलक्ष नवसहस सप्तशत् द्विचत्वारिंशद् मुनि सहिताय श्री विमलनाथ तीर्थंकरादि जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धवर कूट (श्री अजितनाथ जी की टोक)

कूटे सिद्धवर श्रीमान् , अजिते स्मर पाशभित्।
साथै सहस्र मुनिभिः, वंदे भक्त्या शिवाप्तये।।23।।

ॐ ह्रीं सम्मेदशिखर सिद्धवर कूटतः एक अर्बुद अशीति कोटि अष्ट पंचाशत् लक्ष मुनि सहिताय श्री अजितनाथ तीर्थंकराय अर्घ्यं निर्व स्वाहा।

(गिरनार नेमिनाथ जी की टोक)

गिरवरे ऊर्जयंते , नेमिनाथ बुधैर्-नुतः।
कोट्यो द्विसप्तति साधु, सप्त शत् शिवंगतः।।24।।

ॐ ह्रीं श्री गिरनार पर्वत सिद्धक्षेत्र द्विसप्तति कोटी सप्तशत् मुनि सहिताय श्री नेमिनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वर्णभद्र कूट(श्री पारसनाथ जी की टोक)

स्वर्णभद्र कूटे श्रीमत्, पार्श्व नाथो शिवं गतः।
त्रिंशत मुनियुड् मुक्ती , वधू लेभे नमामि तान्।।25।।

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्र पर्वत द्विअशीति कोटी चतुरशीति लक्ष पंच चत्वारिंशद् सहस्र सप्तशत् द्विचत्वारिंशद् मुनि सहिताय श्री पारसनाथ तीर्थंकराय जलादि अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाल

अनाद्य अनिधन-स्यास्य, महात्म्य केन वर्ण्यते।
भव्या एव प्रवंद्यंते , नामव्यैर्-वर्धते कदा।।

तोटक छंद

सुर खेचर किन्नर देव-गमं, यत्रागत चरण मुनीन्द्ररणं।
नाना सुभगा सुमनं प्रसरं, वंदे गिरिराज-महं विशदं।।1।।
तरुभूषित पार्श्व युगं सलयं, निर्वाण भूमि अतिशय सुभगं।
जिनवर मंगल गुण गणनिचयं, वंदे गिरिराज- महं विशदं।।2।।
अति भक्ति भाव भावित सुनगं, शश्रित सुर नर कृत धन भोगं।
संभव भुव जल गुण शुभ प्रकरं, वंदे गिरिराज- महं विशदं।।3।।
मद खेद महीधर नाश पवि, भय भीम निशाचर चारु रवि।
गुणराजि विराजित भाव महं, वंदे गिरिराज- महं विशदं।।4।।
व्यतीत विकल्प समूहरणं , भुवि भस्मित कर्मेंधनाग्नि गणं।
सुरराज नराधिप शेषनुतम्, वंदे गिरिराज -महं विशदं।।5।।

उपजाति छंद

अनंत सौख्यामृत कूप रूपं, त्रिलोक पूज्यं विशदं पवित्रं।
निर्वाण भूशाश्वत सर्वलोके, मुनीन्द्र वद्यं भव ताप मुक्तं।।
ॐ ह्रीं श्री तीर्थाधितीर्थ सम्मेदशिखरस्य जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्व. स्वाहा।

शुद्धोपयोग उपलब्ध मनंत सौख्य।
शुद्धात्म सार मुररी कृत-मात्म विद्धि।।
सन्मुक्ति संवरण -मदभुत- मादरेण।
सम्मेद शैल कुसुमांजलिनाधि नौमिं।।

पुष्पांजलिं क्षिपेत्

श्री स्वर्ण भद्र कूट चालीसा

दोहा- शीश नवा श्री पार्श्व को, गणधर करूँ प्रणाम।
शाश्वत तीरथराज है, सिद्धों का शिव धाम।।
स्वर्णभद्र शुभ कूट का, चालीसा शुभकार।
चरण वंदना कर यहाँ, गाते बारंबार।।

चौपाई

मध्यलोक के मध्य में भाई, जंबूद्वीप रहा शुभदाई।।1।।
जिसके मध्य मेरु शुभ जानो, भरत क्षेत्र दक्षिण में मानो।।2।।
आर्य खंड जिसमें शुभकारी, भारत देश रहा मनहारी।।3।।
झारखंड शुभ प्रांत कहाए, जिला गिरीडीह जिसमें आए।।4।।
श्री सम्मेद शिखर शुभकारी, जिसकी छटा रही मनहारी।।5।।
जो निर्वाण क्षेत्र कहलाए, मुनिवर जहाँ पे ध्यान लगाए।।6।।
किए तपस्या जो अतिशायी, कर्म निर्जरा जिससे पाई।।7।।
तीर्थंकर पदवी के धारी, हुए भूत में मंगलकारी।।8।।
अन्य मुनीश्वर पावन गाए, इसी क्षेत्र से शिव पद पाए।।9।।
इस कालिक चौबीसी जानो, ऋषभादिक तीर्थंकर मानो।।10।।

जिनमें बीस तीर्थंकर गाए, इसी क्षेत्र से शिव पद पाए।।11।।
हुण्डावसर्पिणी काल ये गाया, जिसकी है कुछ ऐसी माया।।12।।
आदिनाथ अष्टापद जानो, वासुपूज्य चंपापुर मानो।।13।।
नेमी जिन गिरनार कहाए, महावीर पावापुर पाए।।14।।
शेष जिनेश्वर शिव पद गामी, अन्य मुनीश्वर अंर्तयामी।।15।।
इसी तीर्थ से मोक्ष सिधाए, यह निर्वाण क्षेत्र कहलाए।।16।।
पार्श्व प्रभू उपसर्ग विजेता, हुए आप कर्मों के जेता।।17।।
नाग नागिनी जो कहलाए, महामंत्र प्रभु जिन्हें सुनाए।।18।।
धरणेन्द्र पद्मावति कहलाए, देव सुगति के सुख जो पाए।।19।।
प्रभु ने संयम को अपनाया, निज आतम का ध्यान लगाया।।20।।
कमठ घूमते वहाँ पे आया, देख प्रभु को बैर जगाया।।21।।
तब उपसर्ग कमठ ने ढाया, मर्म धर्म का जान न पाया।।23।।
देवों ने उपसर्ग हटाया, प्रभु ने केवलज्ञान जगाया।।24।।
समवशरण तव देव बनाए, देव इन्द्र जयकार लगाए।।25।।
दिव्य देशना प्रभू सुनाए, श्रद्धा ज्ञान जीव कई पाए।।26।।
संयम जीवन में अपनाए, केवलज्ञान जीव प्रगटाए।।27।।

गणधर दश प्रभु के कहलाए, गणधर प्रथम स्वयंभू गाए।।28।।
श्री सम्मेदशिखर कहलाए, स्वर्णभद्र शुभ कूट कहाए।।29।।
कर बिहार प्रभु जहाँपे आए, निज आतम का ध्यान लगाए।।30।।
योग निरोध किए जिन स्वामी, एक माह का अंर्तयामी।।32।।
श्रावण शुक्ल सप्तमी पाए, खड्गासन से मोक्ष सिधाए।।32।।
सुर नर पशु जिनके गुण गाते, भक्ति भाव से शीश झुकाते।।33।।
यात्री दूर दूर से आते, प्रभु की जय जयकार लगाते।।34।।
गाते हैं कई भजनावलियाँ, खिलती हैं जन मन की कलियाँ।।35।।
पूजा कोई विधान रचाते, आरती करके छत्र चढ़ाते ।।36।।
मम् सौभाग्य उदय में आया, तीर्थराज का दर्शन पाया।।37।।
प्रभु की महिमा है अतिशायी, जीवों को हर सौख्य प्रदायी।।38।।
योग साधना करते योगी, स्वास्थ्य लाभ पाते हैं रोगी।।39।।
अज्ञानी सद्ज्ञान जगावें, भोगी भोग संपदा पावें ।।40।।

दोहा- स्वर्णभद्र शुभ कूट का , चालीसा शुभकार।
सम्मेदशिखर शुभ तीर्थ की, महिमा अपरंपार।।
सुख शांती सौभाग्य हो, स्वजन होंय अनुकूल।
दीन दरिद्री जो विशद, पॉए सिद्धिया मूल।।

जाप- ॐ ह्रीं तीर्थराज श्री सम्मेद शिखराय नमः।

श्री पार्श्वनाथ भगवान की आरती

पारसनाथ भगवान,आज थारी आरती उतारूँ।
अरती उतारूँ थारी मूरत निहारें, कर दे भव से पार
आज थारी...
अश्वसेन के राजदुलारे, वामा की आँखों के तारे।
जन्में हैं काशीराज–आज थारी.....।।1।।
बाल ब्रह्मचारी हितकारी, विघ्न विनाशक मंगलकारी।
जैन धर्म के ताज– आज थारी.....।।2।।
नाग युगल को मंत्र सुनाया, देवगति को क्षण में पाया।
किया प्रभू उपकार– आज थारी.....।।3।।
दीन बन्धु हे! केवलज्ञानी, भव–दुःखहर्ता शिव सुख दानी।
करो जगत उद्धार– आज थारी.....।।4।।
"विशद" अरती लेकर अये, भक्ति भाव से शीश झुकाये।
जन–जन के सुखकार– आज थारी.....।।5।।
बाली और महाबली मुनि, नाग कुमार भी उनके साथ।